Inspira- Journal of Modern Management & Entrepreneurship (JMME)
p-ISSN : 2231–167X, Impact Factor : 2.3982, Volume 07, No. 03, July, 2017, pp. 349-352

प्राथमिक शिक्षा में अपव्यय और अवरोधन

सुमन कुमावत*

अनिवार्य प्राथमिक शिक्षा के प्रचार में जहाँ अन्य बाधाएँ सामने आई उनमें अपव्यय तथा अवरोधन की समस्याएँ भी प्रमुख रही है। शिक्षा में जब अपव्यय पर बात होती है तो पाया जाता है कि प्राथमिक शिक्षा में अपव्यय और अवरोधन अधिक है। हमारी प्राथमिक शिक्षा के लिए यह एक गम्भीर समस्या है। हम जब तक इस समस्या से निजात नहीं पाते तब तक शिक्षा के सार्वजनीकरण का हमारा सपना पूरा नहीं हो सकता।

अपव्यय का अर्थ

अपव्यय का आशय बालक का अपनी प्राथमिक शिक्षा पूरी किए बिना ही विद्यालय छोड़ देना, जिससे बालक पर खर्च किया गया धन, समय और श्रम बेकार चला जाता है। हार्टोग कमेटी के अनुसार–"प्राइमरी शिक्षा पूरी करने से पहले बच्चे का किसी स्तर पर स्कूल छोड़ देना अपव्यय है।"

अवरोधन का अर्थ

अवरोधन का आशय कक्षा में असफल रहने से लिया जाता है। अर्थात एक ही कक्षा में दोबारा पढ़ाई के लिए ठहरना।

प्राथमिक शिक्षा में अपव्यय व अवरोधन की स्थिति

एन॰सी॰ई॰आर॰टी॰ द्वारा प्रकाशित "Encyclopedia of Indian Education Vol. 2 में कहा गया है कि "शोध अध्ययनों से निरिक्षण कर यह पाया गया है 20: बच्चे ग्रामीण इलाकों में विद्यालय से बाहर तथा 25: बच्चे शहरी क्षेत्र में विद्यालय से बाहर है, ये सभी बच्चे किसी रोजगार में सलंग्न है, जिनसे उन्हें कुछ आमदनी होती है।"

राजस्थान के संदर्भ में हम प्रवेश लेने वाले ड्राप–आउट, अनामांकित बालक–बालिकाओं की स्थिति वर्ष 2004 के तथ्यों में निम्न प्रकार से देख सकते हैं।

कक्षा I में प्रवेश लेने वाले बच्चें	ड्राप आउट बालक–बालिकाओं की संख्या
बालक – 610148	बालक – 103881
बालिका – 544894	बालिका – 151028
कुल – 1155042	कुल – 254909

अपव्यय व अवरोधन के कारण

- **समाजिक एवं आर्थिक कारण**
  - **निर्धनता**–निर्धन अभिभावक अपने भोजन–वस्त्र की व्यवस्था ही ठीक प्रकार से नहीं कर पाते, ऐसी दशा में वे अपने बालकों को शिक्षा कैसे दिलाएँ। वे अपने बच्चों के लिए पढ़ाई के साधन नहीं जुटा पाते जिससे बालक बीच में पढ़ना छोड़ देता है। निर्धन अभिभावक शिक्षा की अपेक्षा जीविका को अधिक महत्व देते है। अतः वे अपने बच्चों को पढ़ाना छुडाकर किसी काम में लगा देते है इससे अपव्यय और अवरोधन अधिक बढ़ रहा है।

* शोधार्थी (पी.एच.डी.), राजस्थान विश्वविद्यालय, जयपुर।